

॥ श्रीगणेशाय ॥

॥ श्रीगणेशाय ॥

II-50

श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

[illegible]

वीकवडं धत्वा रुस्य संमृदा धवं वामन कोन मत्सं रग स्थिरं विरुवथ ॥ वज्रसंभु
 वरु वरुघण कथा विर्णं । कां वना रं वज्रना म कनया श धा तेन ॥ वज्रना कं सव कारं ॥
 धनू वीन धन कतं । वज्रसा धू क स्या मारुं सा धू का ली छिव ज रु ॥ न क वि श्रा ड व डं य
 सत्वं य श्य क स लितं । शु र्य प हा व ल म कू टं वि वि ग र स ना च त ध रं वि रु व थ ॥ व डं
 वि र्णं थियं ॥ ३ स्वन ग ट य ३ ॥ जा य ॥ उं व ड स त्व रू ॥ १ ॥ या या य ॥ उं जू का र्या य
 स्वा हा ॥ व ड स त्व रू ॥ व ड वा ड ड ४ ॥ व ड ता ग हा ॥ व ड सा धू स ४ ॥ य वा उ ॥ उं न म रु रू
 ऊा र्या य ॥ व ड स त्व म हा स त्व व ड ता ग स वू धि ग ४ । व ड वा ड ड ड कं व ड सा धू न म्मा न
 म ४ ॥ व ति ॥ र्ण रं य र्व व रु ॥ रु नि जू का र्या दि य र्ण रं म क ४ ॥ ३ ॥ व का र्ण व ता

स्वायं जय ॥ ॐ ॥ कना अग्रवजता स्यात्पुनः कला स्यां वज्रकिंकि। ने शकमा तापि
कारं तत्तमा ता यथी शुभं ॥ वायव्यवज्रगीतां वीना वादनरुत्तमं। नमो न्या कन
स्याम्मा मानस्य मावं सवज्रकं ॥ सूर्योपरात्र लमक किंकिं डं विविशारुत्तमा वत्र ध
वं विहावय ॥ जाय चक्रस ३ वजन थिय ३ स्वानकय ३ ॥ आ। या। य ॥ उं व ड वास्य
हं ॥ वज्रमास्य हं ॥ वज्रगीत्य हं ॥ वज्रनृत्य अ २ वज्रयूय हं ॥ वज्रधूप हं ॥ वज्रासा
क हं ॥ वज्रगल्य हं ॥ य। वा। पु ॥ उं नमा २ हता स्य २ ॥ अथो ता स्याम दाहयो सर्वो
सकात र विगायो द्रुह सा म हा क ता अथो ना स्या न मा मि हं ॥ वासि ॥ यथे म्मा २ ॥

हं किं ता स्या दिवा द धा ना भकं ॥ ४ ॥ कना दकिं न तत्त स सुवस्य ॥ ॐ ॥ कन २ दाकिने
विश्वकवत्त मनुष्यं कां ताव जा कन वत्त संरुर्ग ॥ वज्रयर्थी कनिषर्तु हवर्तु सुय्येय
हं दिह डे क मूखे सव्य नव जां दीन लायु ल्या धन्यावत्त दाहि नय स स्तिग २ ॥ वज्रव
त्त योगवर्तु आकवत्त य हा त्त रं ॥ दकिं न वत्त मा ताव वा मय धृक्क वा विनं ॥ वं जा ॥ पु
ल य्मा हं रुय्ये शुय्ये क वा विनं ॥ वज्रकडु गु नी तां शु २ विनुम दि धृग हं ॥ यथे रुवः
हा संवर द कय कि कतय हं ॥ वर विष्मा कवत्त य सत्तयर्थी क स स्तिगा वत्त मक
हं यां डं न ल रुव नाहं यो म्ब व ध वा विहावा ॥ स वज्रन थिय धा ३ स्वानकय धा ३ ॥ जाय ॥

सिद्धिस्तु कथं भवति । विष्णु यज्ञस्तु एतन्मया सत्त्वयर्थं स सिद्धिर्ग । न त्वाहवदयथायुक्तं
 यार्हन्तु न विविक्तयुक्तं ॥ सत्त्वयुक्तं यथा ३ स्वानुक्तं यथा ३ ॥ जाय ॥ आयाय ॥ उं वः
 ऊधमोदो ॥ वज्रधमोदो ॥ वज्रधमोदो ॥ वज्रधमोदो ॥ वज्रधमोदो ॥ वज्रधमोदो ॥ वज्रधमोदो ॥
 इमिनाकाय ॥ वज्रधमोदो ॥ वज्रधमोदो ॥ वज्रधमोदो ॥ वज्रधमोदो ॥ वज्रधमोदो ॥ वज्रधमोदो ॥
 नमस्तु ॥ वसि ॥ इमिनाकाय ॥ वज्रधमोदो ॥ वज्रधमोदो ॥ वज्रधमोदो ॥ वज्रधमोदो ॥ वज्रधमोदो ॥
 यथायथाय ॥ मेरुयाभासदधर्मा ॥ अयायं ऊधर ॥ कनिद्योर्मे ॥ नमस्तु ॥ काय ॥ दधः ॥
 दधिनस्तु ॥ काय ॥ ऊधर ॥ वज्रधमोदो ॥ वज्रधमोदो ॥ वज्रधमोदो ॥ वज्रधमोदो ॥ वज्रधमोदो ॥
 मासथा ॥ यद्विमायां वथायथा ॥ वज्रधमोदो ॥ वज्रधमोदो ॥ वज्रधमोदो ॥ वज्रधमोदो ॥ वज्रधमोदो ॥

नारु निरायथा ॥ उरुत्रयकजसस्तु ॥ वज्रधमोदो ॥ वज्रधमोदो ॥ वज्रधमोदो ॥ वज्रधमोदो ॥ वज्रधमोदो ॥
 यद्विमायां वथायथा ॥ वज्रधमोदो ॥ वज्रधमोदो ॥ वज्रधमोदो ॥ वज्रधमोदो ॥ वज्रधमोदो ॥
 य ॥ ३ स्वानुक्तं यथा ३ ॥ आयाय ॥ उं मेरु ॥ दध ॥ काय ॥ स्वादा ॥ उं अभासदधर्मा ॥
 उं सर्वयाय ॥ उं सर्वयाय ॥ वज्रधमोदो ॥ वज्रधमोदो ॥ वज्रधमोदो ॥ वज्रधमोदो ॥ वज्रधमोदो ॥
 वज्रधमोदो ॥ उं सर्वयाय ॥ उं सर्वयाय ॥ वज्रधमोदो ॥ वज्रधमोदो ॥ वज्रधमोदो ॥ वज्रधमोदो ॥
 उं अभासदधर्मा ॥ उं अभासदधर्मा ॥ वज्रधमोदो ॥ वज्रधमोदो ॥ वज्रधमोदो ॥ वज्रधमोदो ॥
 स्वादा ॥ उं अभासदधर्मा ॥ उं अभासदधर्मा ॥ वज्रधमोदो ॥ वज्रधमोदो ॥ वज्रधमोदो ॥ वज्रधमोदो ॥
 विष्णु यज्ञस्तु ॥ उं अभासदधर्मा ॥ उं अभासदधर्मा ॥ वज्रधमोदो ॥ वज्रधमोदो ॥ वज्रधमोदो ॥ वज्रधमोदो ॥

[illegible][illegible]



क॥

१ स्तानर्कसंवाचकं धमाह ॥

१ मथावर्गसिद्धयनादयः ॥

१ पूर्वोक्तोदववर्कसंययिनायः ॥

१ दक्षिण ॥ बल ॥ श्रीखलु ॥ कर्म ॥

१ यक्षिण ॥ बल ॥ ययिनायः ॥ कर्म ॥

१ दुष्ट ॥ विष्टवद ॥ ययिनायः ॥ कर्म ॥

१ अज्ञ ॥ बल ॥ ययिनायः ॥ कर्म ॥

१ नेम ॥ अज्ञ ॥ ययिनायः ॥ कर्म ॥

१ वायव्य ॥ ययिनायः ॥ कर्म ॥

१ अज्ञ ॥ ययिनायः ॥ कर्म ॥

१ अज्ञ ॥ ययिनायः ॥ कर्म ॥

१ अज्ञ ॥ ययिनायः ॥ कर्म ॥

१ अज्ञ ॥ ययिनायः ॥ कर्म ॥

१ अज्ञ ॥ ययिनायः ॥ कर्म ॥

१ अज्ञ ॥ ययिनायः ॥ कर्म ॥

१ अज्ञ ॥ ययिनायः ॥ कर्म ॥

१ अज्ञ ॥ ययिनायः ॥ कर्म ॥

१ अज्ञ ॥ ययिनायः ॥ कर्म ॥

[illegible][illegible]

✕ १५३ ✕

[illegible]

天寶元年

[illegible]

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

